# 27

# प्रभु की ताड़ना

## ( 12:4-11 )

जिन लोगों के नाम इब्रानियों की पुस्तक लिखी गई थी उन्होंने बहुत परेशानियां झेली थीं (10:32-34) और अब वे छोड़ जाने को तैयार थे। इस पाठ के लिए वचन पाठ में, लेखक उन्हें अपनी परेशानियों को और भक्तिपूर्ण ढंग से देखने को कहने की कोशिश कर रहा था। पहले तो उसने दिखाया कि उनकी परेशानियां यीशु द्वारा झेली गई परेशानियों की तुलना में कुछ भी नहीं थीं (आयत 4)। फिर उसने उन्हें एक महत्वपूर्ण नियम कि परमेश्वर उन्हीं की ताड़ना करता है जिनसे वह प्रेम करता है, सिखाने के लिए पुराने नियम से उद्धृत किया (आयतें 5, 6; देखें अय्यूब 5:17; नीतिवचन 3:11, 12)। इस पाठ में हम प्रभु की ताड़ना की चर्चा करेंगे। यह विषय आसान नहीं है, पर उस गहरी समझ के कारण जो इसमें से मिल सकती है इसको जारी रखना लाभदायक है। यह तय करने की कोशिश करते हुए कि प्रभु की ताड़ना *क्या* है और परमेश्वर हमें ताड़ना *क्यों* करता है और हमें परमेश्वर की ताड़ना को *कैसे* मानना चाहिए, वचन की समीक्षा करें।

### यह क्या है?

12:4-11 में हम स्वर्गीय पिता से सांसारिक पिताओं की तुलना किए जाने को भी देखें। कुछ अर्थों में सांसारिक पिताओं द्वारा की जाने वाली ताड़ना परमेश्वर की ताड़ना की तरह ही है। कुछ तरह से यह बहुत ही अलग है।

**सांसारिक पिता**

पुराने और नये दोनों नियमों में पिता अपने बच्चों को ताड़ना करते हैं (नीतिवचन 13:1; 19:18; इफिसियों 6:4)। *Paideia* का अनुवाद ''ताड़ना'' ''बच्चा'' (*pais*) के लिए शब्द का क्रिया रूप है, जिसका अर्थ है ''बच्चों को सिखाना।'' यह उस प्रशिक्षण की बात करता है जो ''अनुग्रहकारी और पक्की'' है[1] यानी बच्चे को वह बनाने के लिए जो उसे बनना चाहिए, जो भी आवश्यक हो प्रशिक्षण देना।

मुख्यतया ताड़ना दो प्रकार की होती है, निरोधक और सुधारक। निरोधक ताड़ना का उद्देश्य (जैसा कि शब्द से संकेत मिलता है) बच्चे को गलती करने से रोकना है। इसमें शिक्षा देना और चेतावनी देना शामिल है। इसमें बच्चे को कोई काम देकर यह सुनिश्चित करना हो सकता है कि वह उसे अपनी योग्यता से पूरी ताकत के साथ दिल से पूरा करे। (मुझे अपने पिता का ध्यान आता है जब वह मुझे पुरुष बनने में सहायता करने की कोशिश कर रहे थे; वह यह सुनिश्चित करते थे कि मेरे पास कुछ करने को हमेशा अच्छा काम हो और जैसे जैसे मैं बड़ा होता और मज़बूत

होता गया मुझे और कठिन काम देते रहे।)

सुधारक ताड़ना बच्चे के गलती करने के बाद इस्तेमाल की जाती है। इसमें डांट, बच्चे को अपने कामों का परिणाम भुगतने देना और दण्ड देना हो सकता है। (हां, बड़ा होते हुए मुझे भी सुधारक ताड़ना मिलती था।)

**स्वर्गीय पिता**

प्रभु की ताड़ना में निरोधक और सुधारक दोनों बातें होती हैं। यहूदी मसीही लोगों को इस सच्चाई के चौंकाने वाला उदाहरण पता होगा, जिसमें जंगल में उनके पूर्वज रहे थे। सीनै पर्वत पर इस्राएलियों द्वारा परमेश्वर की सामर्थ को देखना निरोधक ताड़ना थी (देखें व्यवस्थाविवरण 4:36)। जंगल में चालीस साल उन्हें सुधारक ताड़ना मिली (देखें व्यवस्थाविवरण 8:2-5)।[2] दोनों प्रकार की ताड़ना इस्राएलियों की भलाई के लिए थी।

परमेश्वर की निरोधक और सुधारक ताड़ना का अधिकतर भाग उसके वचन के द्वारा मिलता है (देखें नीतिवचन 6:23)। परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया वचन हमें बताता है कि क्या सही है और क्या गलत। यह हमें गलत काम करने के परिणामों की चेतावनी देता है। अपने वचन में परमेश्वर हमें ऐसी जिम्मेदारियां देता है जो हमें बढ़ने और परिपक्व होने में सहायक होती हैं। जब हम नाकाम होते हैं तो वचन हमें डांटता है। आम तौर पर आज्ञा न मानने पर हम परिणामों को भुगतते हैं।

स्पष्टतया यहां दी गई विशेष ताड़ना में वे कठिनाइयां थीं जिनमें से मूल पाठक गुज़र रहे थे। यानी वे परेशानियां जिन्होंने उन्हें ''दुखी'' कर दिया (आयत 11)। इसमें मसीही बनने के समय से लेकर अब तक की उनकी परेशानियां हैं। इसमें विशेष रूप से सताव भी था (आयत 4क)। कोई पूछ सकता है, ''क्या आप यह कह रहे हैं कि परमेश्वर कई बार हमें ताड़ना करने के लिए सताव को भेजता है?'' नहीं, परन्तु कई बार हमारी ताड़ना के भाग के रूप में परमेश्वर कठिनाई को सहने के लिए हमें *अनुमति* देता है।[3] (मैंने आपसे कहा था कि यह एक कठिन विषय है!)

मुझे इस विचार को जोड़ना होगा कि जब हमारे साथ कुछ बुरा होता तो बहुत बातें ऐसी होती हैं जिन्हें हम जान नहीं सकते। यदि यह हमारे अपने कामों का स्वाभाविक परिणाम नहीं है तो हमें पता नहीं चल सकता कि यह परमेश्वर की ओर से मिला या शैतान की ओर से, या पाप से ग्रस्त संसार में रहने के कारण मिल गया। यदि किसी प्रकार से इसमें परमेश्वर शामिल है, तो हमें उसकी मंशा का पता नहीं चल सकता (यशायाह 55:8, 9)-यह जानने के अलावा कि वह अन्त में सब बातों से हमारी भलाई ही करवाना चाहता है।

तौभी ऐसी कई सच्चाइयां हैं जिन्हें हम जान *सकते* हैं। हम जान सकते हैं कि हमारे रास्ते में कोई भी आए, पर यीशु उसमें से भलाई निकाल सकता है (रोमियों 8:28)। हम जान सकते हैं कि परमेश्वर की सहायता से हम इसमें से निकल सकते हैं (इब्रानियों 13:5ख, 6)।[4] हमारे लिए संदेश यह है कि हम जान सकते हैं कि परमेश्वर ने हमारे जीवनों में इसे होने दिया क्योंकि वह हम से *प्रेम करता* है।

## परमेश्वर हमें ताड़ना क्यों करता है?

ताड़ना का उद्देश्य क्या है? कइयों को इस अवधारणा से निपटने में परेशानी आती है कि परमेश्वर हमें इसलिए ताड़ना देता है क्योंकि उन्हें लगता है कि उनके जीवनों में परमेश्वर की भूमिका उनकी हर इच्छा को पूरा करना है। मैंने लोगों को अपने दुष्ट जीवनों को सही ठहराने की कोशिश में यह कहते हुए सुना है, ''परन्तु परमेश्वर चाहता है कि मैं *खुश* रहूं!''

### सांसारिक पिता

अधिकतर सांसारिक पिता चाहते हैं कि उनके बच्चे खुश हों, परन्तु अच्छे पिता अपने बच्चों के लिए उनसे कहीं अधिक इच्छा करते हैं। वे चाहते हैं कि वे अच्छे लोग बनें, परिपक्व और जिम्मेदार व्यस्क बनें। मसीही पिता चाहते हैं कि उनके बच्चे विश्वासी मसीही पुरुष और स्त्रियां बनें। जो पिता अपने बच्चों को ताड़ना नहीं कर पाता वह यह संकेत देता है कि उसे इस बात की परवाह नहीं है कि वे क्या मांगते हैं। वह कह सकता है कि वह उनसे प्रेम करता है, परन्तु वह उनसे उस प्रकार प्रेम नहीं करता जिस प्रकार से करना चाहिए।

आयतें 7 और 8 संकेत देती हैं कि पहली सदी का पिता आम तौर पर पुत्र को ताड़ना करने के लिए समय देता था जबकि अवैध सन्तान को ताड़ना करने की परवाह नहीं करता था। आम तौर पर उस ज़माने में केवल जायज सन्तान ही वारिस होती थी, यानी केवल उसी के लिए पिता अपनी सम्पत्ति छोड़ता था। पिता के लिए यह आवश्यक था कि उसका जायज वारिस इस भरोसे के योग्य व्यस्क बने।

सांसारिक पिताओं की कमियों का उल्लेख आयत 10 में किया गया है। सबसे बेहतरीन पिता केवल उतनी ही ताड़ना दे सकता है जितना उसकी समझ में हो। वह अपने बच्चों की भलाई ही की इच्छा कर सकता है परन्तु मनुष्य नश्वर होने के कारण गलतियां कर सकता है। (मैंने अच्छा पिता बनने की कोशिश की, परन्तु मैं की गई कई गलतियों को जानता हूं और मुझे यकीन है कि ऐसी भी गलतियां हैं जिनका मुझे पता ही नहीं।) बेशक अपनी सीमाओं के बावजूद एक सचेत पिता अपने बच्चों को ''प्रभु की ताड़ना, और चेतावनी देते हुए'' उनका पालन-पोषण करना चाहेगा (इफिसियों 6:4)।

### स्वर्गीय पिता

अपना ध्यान उस पिता की ओर लगाते हैं जिसमें हमारे वाली कमियां नहीं हैं। परमेश्वर हमें ताड़ना क्यों करता है? आयतें 7 से 11 कम से कम तीन कारण सुझाती हैं।

(1) वह हमें ताड़ना करता है क्योंकि हम उसकी सन्तान हैं (आयत 7)। यदि वह हमें ताड़ना न दे, तो यह इस बात का संकेत होगा कि हम उसकी सन्तान नहीं है (आयत 8)।[5] उसकी सन्तान के रूप में हम उसके ईश्वरीय प्रेम के पास रहे (आयत 6; देखें नीतिवचन 3:12; प्रकाशितवाक्य 3:19)। कइयों का मानना है कि कठिनाइयां और परेशानियां इस बात का संकेत हैं कि परमेश्वर उनसे नाराज है,[6] कि हो सकता है कि वह उनसे घृणा करता हो। इब्रानी मसीही लोगों को यह समझना आवश्यक है कि बात इसके उलट है। प्रभु की ताड़ना उसके *प्रेम* की अभिव्यक्ति है।

(2) वह हमें ''हमारी भलाई के लिए'' ताड़ना करता है (आयत 10)। वह हमें *मज़बूत* लोग बनाने के लिए ताड़ना करता है। ताड़ना के द्वारा हम धीरज रखना सीखते हैं (आयत 7)। फिर, वह हमें *बेहतर* लोग बनाने के लिए ताड़ना करता है: ''कि हम भी उसकी पवित्रता के भागी हो जाएं'' (आयत 10), कि ''चैन के साथ धर्म का प्रतिफल'' पाएं (आयत 11)।

(3) वह चाहता है कि हम जीवन पाएं (आयत 9ख)–भरपूरी का आत्मिक जीवन यहां है और अनन्त जीवन इसके बाद है (देखें यूहन्ना 10:10ख)। ''प्रभु हमें दण्ड देकर हमारी ताड़ना करता है, इसलिए कि हम संसार के साथ दोषी न ठहरें'' (1 कुरिन्थियों 11:32)। हमारे जीवनों में परमेश्वर का मुख्य उद्देश्य हमें प्रसन्न करना नहीं बल्कि हमें स्वर्ग के लिए तैयार करना है।[7]

## हमें कैसे मानना चाहिए?

हमें प्रभु की ताड़ना को कैसे मानना चाहिए? मैं इस प्रश्न को इस प्रकार से लिखता हूं: अवांछित, अनचाहा या अप्रिय होने पर हमारा जवाब क्या होना चाहिए?[8]

### सांसारिक पिता

एक बच्चा प्रेमी पिता की ताड़ना का जवाब कैसे देता है? आयत 9क बताती है कि अधिकतर बच्चे उन पिताओं का जो उनकी इतनी परवाह करते हैं कि वे उन्हें ताड़ना करते हैं, *आदर* करते हैं।[9] पुराना नियम बच्चों को अपने पिताओं की सुनने, उनके निर्देश की ओर ध्यान देने और उनकी ताड़ना से लाभ लेने की सीख देता था (देखें नीतिवचन 13:1; 19:20)। यदि वे ऐसा करते तो बाद में जीवन में वे पीछे मुड़कर उस ताड़ना से मिले लाभ को देख सकते थे (इब्रानियों 12:11ख)।

### स्वर्गीय पिता

यदि हम सांसारिक पिताओं का आदर करते हैं तो हमें अपने प्रेमी स्वर्गीय पिता की ताड़ना का कितना और भी अधिक आदर करना चाहिए (आयत 9)? लेखक ने अपने पाठकों से यह नहीं कहा कि वह अपनी परेशानियों में आनन्द करें (आयत 11क),[10] परन्तु उसने अच्छा व्यवहार रखने का उनसे आग्रह किया। उसने आयत 5 में ताड़ना को सही ढंग से मानने की रूपरेखा बताई:

*मत भूलें* कि बाइबल प्रभु की ताड़ना पर क्या कहती है (आयत 5क)। जब परेशानियां हमें घेर लेती हैं तो इस वचन की सच्चाइयों से ध्यान न हटाओ:

1. परमेश्वर आपसे प्रेम करता है।
2. ताड़ना आपके पुत्र होने का प्रमाण दे सकती है।
3. जो कुछ भी होता है हमें बेहतर लोग बनाने के लिए हो सकता है।

''प्रभु की ताड़ना को *हलकी बात न जान*'' (आयत 5ख)। इसे गम्भीरता से लें। देखें कि आप इससे क्या सीख सकते हैं।

सबसे बढ़कर, ''जब वह तुझे घुड़के तो *हियाव न छोड़*'' (आयत 5ग)। परेशानियों को छोड़ जाने का बहाना न बनाएं बल्कि आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा पाएं। पत्र का उद्देश्य मसीही

लोगों को ''सहने'' के लिए प्रोत्साहित करना था।

ताड़ना मिलने पर हम या तो छुप सकते हैं या अकड़ सकते हैं। हम दीन हो सकते हैं या अहंकारी हो सकते हैं। हम भक्ति या नाराज़गी से भर सकते हैं। इब्रानियों की पुस्तक हमें ''आत्माओं के पिता के और भी अधीन'' होने (आयत 9ख) पर ''सहते सहते [अभ्यास]'' करने की चुनौती देती है ताकि हम ''चैन के साथ धर्म का प्रतिफल'' पा सकें (आयत 11)।

इब्रानियों की पुस्तक पर हाल ही की एक क्लास में पढ़ाते हुए डोग मार्टिंडेल ने कहा, ''जब आप पर परेशानियां आएं, तो अपने हाथों को फैंकते हुए यह न कहें, 'मेरे साथ यह क्यों हुआ?' बल्कि पूछें, 'इससे मैं एक बेहतर व्यक्ति कैसे बन सकता हूं?' '' फिर उसने कहा, ''मेरे साथ जो भी हो, मैं इस प्रकार से प्रतिक्रिया करने की कोशिश करूंगा कि मैं और मज़बूत बनूं।''[11]

## सिखाने वाले के लिए नोट्स

इब्रानियों की पुस्तक के लेखक का उद्देश्य हमारे जीवनों में आने वाली परेशानियों के बारे में पूरी चर्चा करना नहीं था। उसने यह बताने के लिए कि परेशानी किसी भी प्रकार से मसीहियत से मुंह मोड़ लेने का कारण नहीं है वही बताया जो उसे बताना चाहिए था। यदि आप परेशानियों और परीक्षाओं के विषय को और गहराई से अध्ययन करना चाहते हैं, तो रोमियों 5:3-5 और याकूब 1:2-4 पर विचार करें।

टिप्पणियां

[1]डब्ल्यू. ई. वाइन मैरिल, एफ़. अंगर, एंड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोजिटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एंड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 97. [2]व्यवस्थाविवरण 11:2, 5 भी देखें। [3]परमेश्वर ने शैतान को अय्यूब की परीक्षा लेने दी (अय्यूब 1; 2)। [4]उन परेशानियों में जो हमारे सामने आती हैं हम अकेले नहीं, क्योंकि परमेश्वर हमारी परेशानियों को उन तक सीमित कर देता है जिन्हें हम सह सकते हैं। वह हमारे लिए उन्हें सहने का रास्ता निकाल ही देता है (देखें 1 कुरिन्थियों 10:13)। [5]केवल परेशानियों का होना ही इस बात का सबूत नहीं है कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं; परन्तु वचन कहता है कि मसीही लोगों को परेशानियों और सतावों का सामना करना पड़ेगा (प्रेरितों 14:22; 2 तीमुथियुस 3:12)। [6]अय्यूब के ''मित्रों'' को लगा कि जहां तक अय्यूब की बात थी मामला कुछ ऐसा ही था। वे उसे अपने पापों को मान लेने को कहते रहे ताकि सब ठीक हो जाए। [7]परमेश्वर चाहता है कि हम खुश रहें। वह अपने बच्चों को पीड़ादायक जीवन जीते हुए नहीं देखता चाहता, परन्तु यह हमें मज़बूत और बेहतर बनाने अर्थात स्वर्ग के लिए हमें तैयार करने के उसके मुख्य उद्देश्य के बाद आता है। [8]याद रखें कि जब हमारे साथ कुछ बुरा होता है तो उनकी बहुत सी बातें होती हैं जिनका हमें पता नहीं चल सकता। इसलिए हमें सामान्य रूप में अप्रसन्न परिस्थितियों के अपने जवाब पर ध्यान करना आवश्यक है। [9]बेशक अपवाद हैं। [10]याकूब ने लिखा, ''हे मेरे भाइयो, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो, तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो'' (याकूब 1:2), परन्तु वह परीक्षाओं के अन्त में मिलने वाले लाभों पर ज़ोर दे रहा था (आयतें 3, 4)। इब्रानियों की पुस्तक बताती है कि परीक्षाएं *वर्तमान में* प्रसन्नता की बात नहीं होती।

[11]डो मार्टिंडेल, क्लास ऑन हिब्रूस, ईस्टसाइड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, मिडवेस्ट सिटी, ओक्लाहोमा, 2008.